भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 1793
बुधवार, 29 जुलाई, 2026 को उत्तर देने के लिए

एनएवीआईसी तारामंडल की परिचालन स्थिति

1793. श्री श्यामकुमार दौलत बर्वेः

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि भारतीय क्षेत्रीय नौवहन उपग्रह प्रणाली (आईआरएनएसएस-1एफ) उपग्रह पर परमाणु घड़ी की विफलता के कारण एनएवीआईसी तारामंडल की प्रचालन क्षमता केवल तीन पूर्णतः कार्यरत उपग्रहों तक ही सीमित रह गई है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या इस कमी से इस प्रणाली की स्थितिगत सटीकता, समय और संरचनात्मक टेलीमेट्री में कमी आती है जिससे सशस्त्र बलों के पास अपर्याप्त स्टैंडअलोन नेविगेशन ग्रिड रह जाता है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या यह प्रणालीगत संवेदनशीलता भारत की प्रचालनात्मक योजना और वास्तविक समय के मानचित्रण को खतरे में डाल देती है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है, जिसमें तत्काल आकस्मिकता उपग्रह की तैनाती और फ्रंट-लाइन सामरिक नेटवर्कों को बचाने के लिए जुटाए गए वैकल्पिक ट्रैकिंग ग्रिड शामिल हैं?

उत्तर
कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय
तथा प्रधान मंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री
(डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

****

(क) एवं (ख)

आईआरएनएसएस-1एफ का निर्धारित मिशन काल (10 वर्ष) पूरा होने पर, वर्तमान में नाविक उपग्रह समूह में पीएनटी सेवाएँ प्रदान करने के लिए तीन उपग्रह, यथा आईआरएनएसएस-1बी, आईआरएनएसएस -1आई तथा एनवीएस-01 कार्यरत हैं। बुनियादी स्थिति संबंधी सेवा प्रदान करने के लिए कक्षा में कम-से-कम चार उपग्रहों का प्रचालित होना आवश्यक है। इसलिए, वर्तमान में नाविक स्टैंडअलोन स्थिति संबंधी सेवा प्रदान करने में सक्षम नहीं है। हालांकि, इसकी समय-निर्धारण सेवा अभी भी जारी है। वर्तमान में भारतीय सशस्त्र बल अपनी प्रचालन संबंधी सेवाओं के संवर्धन के लिए नाविक सहित बहु-उपग्रह समूह वाले जीएनएसएस का उपयोग कर रहे हैं।

(ग) चूँकि नाविक का उपयोग अधिकांश मामलों में बहु-उपग्रह समूह वाले वातावरण में किया जा रहा है, इसलिए उपयोगकर्ताओं के लिए किसी प्रकार का प्रचालन संबंधी खतरा नहीं है। नाविक का अगला उपग्रह, यथा एनवीएस-03 प्रमोचन के लिए तैयार है तथा दो और उपग्रहों, यथा एनवीएस-04 एवं एनवीएस-05 उपग्रहों का निर्माण कार्य उन्नत चरण में है।

****